देवतापूजनका पूर्वायोजन

भूमिका

'देवतापूजन' अर्थात नित्य ईश्वर उपासना हेतु धर्मद्वारा बताई गई एक सरल आचारपद्धति । मनमें भक्तिभाव निर्माण करने, कृपादृष्टि प्राप्त करने, घरका वातावरण सात्त्विक बनाने एवं भावी पीढीपर धार्मिक संस्कार अंकित करनेमें भी देवतापूजन सहायक है । देवतापूजनकी पूर्वतैयारी, देवतापूजनकी नींव है। इस पूर्वतैयारीसे पूजककी शुद्धि होकर वह चैतन्य ग्रहण करनेमें समर्थ बनता है ।

धार्मिक कृत्य एक प्रकारसे अध्यात्मशास्त्रके वैज्ञानिक प्रयोग ही हैं । कोई भी प्रयोग विशिष्ट पद्धतिसे ही करना आवश्यक है । धार्मिक कृत्योंके सन्दर्भमें भी ऐसा ही है । उचित पद्धतिसे धार्मिक कृत्य करनेपर ही हमें उचित फलप्राप्ति होती है । इसके लिए धार्मिक कृत्यका आधारभूत शास्त्र समझना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है । शास्त्र समझकर कृत्य करनेसे श्रद्धा निर्माण होती है । उक्त दृष्टिकोण सामने रख, इस ग्रन्थमें देवता –पूजनके आधारभूत शास्त्रका विवेचन किया गया है ।

पूजाके पूर्व स्तोत्रपाठ, मन्त्रजप एवं नामजप करनेका महत्त्व; पूजास्थल एवं उपकरणोंकी शुद्धि; देवताके तत्त्वसे सम्बन्धित रंगोली बनाना; देवतापूजन हेतु प्रयुक्त आसनोंके विविध प्रकार; निर्माल्य निकालने तथा देवताओंके चित्र एवं मूर्ति पोंछने की उचित पद्धति आदि जानकारी इस ग्रन्थमें दी है । साथ ही प्रत्यक्ष पूजा आरम्भ करनेसे पूर्व आचमन, प्राणायाम, देशकालका उच्चार, संकल्प एवं न्यास तथा कलश, शंख, घण्टी एवं दीपपूजन क्यों करें, यह भी बताया गया है । सामान्यतः अधिकांश लोगोंको देवतापूजनके कृत्यके विषयमें जानकारी होती है; परन्तु वे पूजाकी पूर्वतैयारीके विषयमें अनभिज्ञ होते हैं । मनपर पूर्वतैयारीका महत्त्व अच्छी तरह अधिक अंकित हो, इस हेतु इस ग्रन्थ में मुख्यतः पूर्वतैयारीके शास्त्रके महत्त्वपर बल दिया गया है। साथ ही देवता –पूजनके महत्त्वपूर्ण कृत्योंका आधारभूत शास्त्र भी बताया गया है ।

श्रीगुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि इस ग्रन्थको पढनेसे पूजकके लिए पूजाकी पूर्वतैयारीका महत्त्व स्पष्ट हो, पूजा भावपूर्वक हो और पूजासे उसे अधिकाधिक चैतन्य प्राप्त हो । – **संकलनकर्ता**

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।]

१. देवतापूजनसम्बन्धी पंचकर्म १४

२. देवतापूजनकी तैयारी १४

* देवतापूजनकी तैयारीसे सम्भावित लाभ १५

* देवतापूजनकी तैयारीका क्रम १५

३. देवतापूजनकी पूर्वतैयारीके प्रत्यक्ष कृत्य १६

* स्तोत्रपाठ अथवा नामजप करना १६

* पूजास्थलकी शुद्धि एवं उपकरणोंकी जागृति करना १६

* रंगोली बनाना * शंखनाद करना १७

* देवतापूजनके लिए आसनका प्रयोग करना १८

* प्राणायाम, देशकाल उच्चारण, संकल्प एवं न्यास करें । १९

* कलश, शंख, घण्टी एवं दीपकी पूजा १९

* पूजासामग्री एवं पूजास्थलकी तथा अपनी शुद्धि २०

४. देवतापूजनकी तैयारीसे सम्बन्धित कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र २०

५. पूजकद्वारा अपने निकट समस्त पूजनसामग्रीकी रचना करना उचित क्यों है ? ६५

६. ईश्वरप्राप्ति शीघ्र होनेके लिए केवल देवपूजा पर्याप्त नहीं, अपितु उसके अगले चरणकी साधना भी करनी आवश्यक ६६

७. देवताओंका अनादर रोकना, कालानुसार देवताकी आवश्यक उपासना है ! ६६

卐 कुछ आनुषंगिक सूत्र ६८